अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

भक्ति साहित्य और भारतीय ज्ञान परम्परा: भाषा एवं लोकचेतना का अध्ययन

प्रियंका दहिया,

शोधकर्त्री, हिन्दी विभाग, मानविकी संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा - 124021

सार

भक्ति साहित्य भारतीय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपरा की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसने भारतीय ज्ञान परंपरा को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य किया। मध्यकालीन भारतीय समाज में जब ज्ञान, धर्म और शिक्षा पर सीमित वर्ग का अधिकार था, तब संत कवियों एवं भक्त कवियों ने लोकभाषाओं के माध्यम से आध्यात्मिक, नैतिक तथा सामाजिक ज्ञान का व्यापक प्रसार किया। भक्ति साहित्य ने भाषा को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम न मानकर सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया। इस साहित्य ने जाति, वर्ग, लिंग एवं धार्मिक भेदभाव का विरोध करते हुए लोकचेतना का विकास किया और भारतीय ज्ञान परंपरा को जनसुलभ बनाया। प्रस्तुत शोध-पत्र में भक्ति साहित्य की भाषा, लोकचेतना तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः भक्ति साहित्य, भारतीय ज्ञान परंपरा, लोकभाषा, लोकचेतना, संत साहित्य, सामाजिक समरसता।

भूमिका

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। वेद, उपनिषद, पुराण, गीता तथा विभिन्न दार्शनिक परंपराएँ इसके प्रमुख आधार हैं। यह परंपरा केवल आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन-मूल्यों, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानव कल्याण को भी समान महत्व देती है।

मध्यकाल में जब समाज जातिगत भेदभाव, धार्मिक रूढ़ियों तथा कर्मकांडों से ग्रस्त था, तब भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की। संत कवियों ने लोकभाषाओं को अपनाकर भारतीय ज्ञान परंपरा को जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग किसी विशेष जाति, वर्ग या भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक मनुष्य के लिए समान रूप से उपलब्ध है। इस प्रकार भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का लोकतांत्रिक स्वरूप प्रस्तुत करता है।

भक्ति साहित्य की अवधारणा

भक्ति साहित्य हिन्दी तथा भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसका विकास मुख्यतः मध्यकाल (14वीं-17वीं शताब्दी) में हुआ। श्भक्तिश् का अर्थ है-ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा, समर्पण और आत्मनिवेदन। भक्ति साहित्य का मूल उद्देश्य ईश्वर की उपासना के साथ-साथ मानवता, समानता, प्रेम और नैतिक मूल्यों की स्थापना करना था। इस साहित्य ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धार्मिक आडंबर और कर्मकांड का विरोध करते हुए सरल, सहज एवं अनुभव-आधारित आध्यात्मिक जीवन का संदेश दिया।

भक्ति साहित्य की दो प्रमुख धाराएँ हैं- निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। निर्गुण धारा के संत कवि, जैसे कबीर, रैदास, गुरु नानक और दादूदयाल, निराकार ईश्वर की उपासना तथा सामाजिक समरसता पर बल देते हैं। वहीं सगुण धारा के कवि, जैसे तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई और रसखान, साकार रूप में राम और कृष्ण की भक्ति का वर्णन करते हैं।

भक्ति साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत के स्थान पर अवधी, ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, मराठी और सधुक्कड़ी जैसी लोकभाषाओं का प्रयोग किया गया, जिससे आध्यात्मिक एवं नैतिक ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचा। इस प्रकार भक्ति साहित्य केवल धार्मिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, लोकचेतना, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक समन्वय का सशक्त माध्यम है।

भारतीय ज्ञान परंपरा: स्वरूप एवं विशेषताएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और सतत् विकसित होने वाली ज्ञान-परंपराओं में से एक है। इसका आधार वेद, उपनिषद, पुराण, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत तथा विभिन्न दार्शनिक दर्शनों में निहित है। यह परंपरा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि दर्शन, विज्ञान, आयुर्वेद, गणित, योग, ज्योतिष, साहित्य, कला, नैतिकता तथा सामाजिक

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

जीवन के विविध आयामों को भी समाहित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास, आत्मबोध तथा लोककल्याण है।

इसकी प्रमुख विशेषताओं में समग्र दृष्टिकोण, आध्यात्मिकता और नैतिकता का समन्वय, सत्य एवं अहिंसा, मानवता, सहिष्णुता, प्रकृति के प्रति सम्मान, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसी सार्वभौमिक मान्यताएँ शामिल हैं। यह परंपरा ज्ञान को केवल सैद्धांतिक न मानकर व्यवहारिक जीवन से जोड़ती है और अनुभव, चिंतन तथा साधना को समान महत्व देती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण और संवर्धन होता रहा है। यही कारण है कि यह परंपरा समय के साथ निरंतर विकसित होती हुई आज भी भारतीय संस्कृति, शिक्षा और सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान कर रही है। भक्ति साहित्य ने इसी ज्ञान परंपरा के मूल्यों को लोकभाषाओं के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाकर इसे और अधिक व्यापक तथा जनोन्मुख बनाया।

भक्ति साहित्य की भाषा

भक्ति साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी जनसुलभ, सरल, सहज और लोकाभिमुख भाषा है। मध्यकाल में संस्कृत ज्ञान और धर्म की प्रमुख भाषा थी, जिसे केवल विद्वान वर्ग ही समझता था। इसके विपरीत भक्ति कवियों ने जनसामान्य तक अपने विचार पहुँचाने के लिए लोकभाषाओं और बोलियों को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इससे आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक ज्ञान का व्यापक प्रसार हुआ तथा भाषा ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का सशक्त माध्यम बनी।

भक्ति साहित्य में विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं और बोलियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कबीर ने सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग करते हुए सरल एवं प्रभावशाली शैली में सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक आडंबरों पर प्रहार किया। तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में कर रामकथा को जन-जन तक पहुँचाया। सूरदास ने ब्रजभाषा में कृष्ण-भक्ति और वात्सल्य रस का अद्भुत चित्रण किया, जबकि मीराबाई ने राजस्थानी और ब्रज मिश्रित भाषा में अपनी भक्ति-भावना व्यक्त की। गुरु नानक ने पंजाबी तथा नामदेव और तुकाराम ने मराठी भाषा के माध्यम से लोकचेतना का प्रसार किया।

भक्ति साहित्य की भाषा में कृत्रिमता के स्थान पर स्वाभाविकता, भावप्रधानता और संप्रेषणीयता का विशेष महत्व है। इसमें लोकजीवन से जुड़े मुहावरे, लोकोक्तियाँ, प्रतीक और बिंबों का व्यापक प्रयोग मिलता है, जिससे यह साहित्य सामान्य जनता के लिए सहज ग्राह्य बन गया। इस प्रकार भक्ति साहित्य की भाषा ने केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति को ही समृद्ध नहीं किया, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय मूल्यों को जनसामान्य तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भक्ति साहित्य और लोकचेतना

भक्ति साहित्य भारतीय समाज में लोकचेतना के विकास का एक प्रभावशाली माध्यम रहा है। लोकचेतना का अर्थ है-सामान्य जनजीवन, उनकी समस्याओं, अनुभवों, सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक भावनाओं के प्रति जागरूकता। मध्यकालीन भारत में जब समाज जाति-पाँति, धार्मिक आडंबर, ऊँच-नीच और सामाजिक असमानता से ग्रस्त था, तब भक्ति संतों ने अपने काव्य के माध्यम से जनमानस में समानता, प्रेम, करुणा और मानवता की भावना का संचार किया।

कबीर, रैदास, गुरु नानक, दादूदयाल, तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई जैसे भक्त कवियों ने लोकभाषाओं में रचनाएँ कर समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपने विचार पहुँचाए। उन्होंने धर्म को कर्मकांडों और रूढ़ियों से मुक्त कर भक्ति, सदाचार और मानव-सेवा को जीवन का आधार माना। कबीर ने जातिगत भेदभाव और धार्मिक पाखंड का विरोध किया, जबकि गुरु नानक ने मानव समानता और भाईचारे का संदेश दिया। तुलसीदास और सूरदास ने अपने काव्य के माध्यम से नैतिकता, पारिवारिक मूल्यों और लोकमंगल की भावना को प्रतिष्ठित किया।

भक्ति साहित्य की लोकचेतना का आधार मानवता, सामाजिक समरसता और लोककल्याण है। इसने जनसामान्य को आत्मसम्मान, सामाजिक न्याय और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का बोध कराया। इसलिए भक्ति साहित्य केवल भक्ति का साहित्य नहीं, बल्कि सामाजिक जागरण, सांस्कृतिक चेतना और भारतीय ज्ञान परंपरा को जन-जन तक पहुँचाने वाला एक सशक्त लोकआंदोलन भी है।

भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप

भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सशक्त और जनोन्मुख स्वरूप प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार सत्य, धर्म, करुणा, आत्मज्ञान, लोककल्याण और मानवता जैसे सार्वभौमिक मूल्य हैं। भक्ति कवियों ने इन आदर्शों को वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता तथा अन्य शास्त्रीय ग्रंथों की जटिल व्याख्याओं से निकालकर सरल लोकभाषाओं में प्रस्तुत किया, जिससे सामान्य जन भी इनका लाभ उठा सके। इस प्रकार भक्ति साहित्य ने ज्ञान को सीमित वर्ग की बौद्धिक संपत्ति न रहने देकर उसे समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाया।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

कबीर ने आत्मज्ञान, सत्य और समानता पर बल देते हुए जाति-पाँति तथा धार्मिक आडंबरों का विरोध किया। गुरु नानक ने मानव सेवा, सत्य और ईश्वर की एकता का संदेश दिया। तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से आदर्श जीवन, धर्म, कर्तव्य और लोकमंगल की भावना को प्रतिष्ठित किया, जबकि सूरदास और मीराबाई ने प्रेम, भक्ति और समर्पण को आध्यात्मिक साधना का सर्वोच्च मार्ग माना।

भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, नैतिक आचरण, सहिष्णुता, करुणा और लोककल्याण की भावना से भी जुड़ी हुई है। इस प्रकार भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल सिद्धांतों को जनजीवन से जोड़ने वाला एक प्रभावी माध्यम है, जिसने सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समानता और मानवीय मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भक्ति साहित्य में सामाजिक सुधार

भक्ति साहित्य मध्यकालीन भारतीय समाज में सामाजिक सुधार का एक प्रभावशाली माध्यम था। उस समय समाज जाति-पाँति, छुआछूत, धार्मिक आडंबर, कर्मकांड और सामाजिक असमानताओं से प्रभावित था। संत एवं भक्त कवियों ने इन कुरीतियों का विरोध करते हुए समानता, मानवता और भाईचारे का संदेश दिया। कबीर ने जातिगत भेदभाव और पाखंड का तीखा विरोध किया तथा सत्य और सदाचार पर बल दिया। गुरु नानक ने सभी मनुष्यों को समान मानते हुए सेवा, प्रेम और सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा दिया। रैदास ने श्रम की गरिमा और सामाजिक समता का समर्थन किया, जबकि मीराबाई ने स्त्री की स्वतंत्र आध्यात्मिक पहचान को प्रतिष्ठित किया। तुलसीदास और सूरदास ने अपने काव्य में आदर्श जीवन, नैतिक मूल्यों और लोकमंगल की भावना को महत्व दिया। इस प्रकार भक्ति साहित्य ने सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करते हुए भारतीय समाज में व्यापक सामाजिक चेतना और सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भक्ति साहित्य और सांस्कृतिक समन्वय

भक्ति साहित्य भारतीय संस्कृति में सांस्कृतिक समन्वय का एक सशक्त माध्यम है। मध्यकालीन भारत में जब समाज धार्मिक, जातीय और सामाजिक विभाजनों से प्रभावित था, तब भक्ति आंदोलन ने प्रेम, समानता, सहिष्णुता और मानवता के आधार पर विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य किया। संत एवं भक्त कवियों ने यह संदेश दिया कि ईश्वर एक है और उसकी प्राप्ति के लिए किसी विशेष धर्म, जाति या संप्रदाय का बंधन आवश्यक नहीं है।

कबीर, गुरु नानक, रैदास, दादूदयाल और अन्य संत कवियों ने हिंदू और मुस्लिम दोनों परंपराओं के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय करते हुए धार्मिक सद्भाव और सामाजिक एकता को बढ़ावा दिया। वहीं तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, भक्ति, नैतिकता और लोकजीवन को अपनी रचनाओं में प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया। इन कवियों ने लोकभाषाओं का प्रयोग करके विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक परंपराओं को एक साझा मंच प्रदान किया।

भक्ति साहित्य में संगीत, भजन, कीर्तन और लोकपरंपराओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जिसने भारतीय संस्कृति को समृद्ध और जीवंत बनाया। इस साहित्य ने विविध भाषाओं, आस्थाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं के बीच संवाद स्थापित कर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ किया। इस प्रकार भक्ति साहित्य भारतीय संस्कृति के समन्वयवादी स्वरूप का सशक्त प्रतिनिधि है तथा आज भी सांप्रदायिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता और मानवीय मूल्यों की प्रेरणा प्रदान करता है।

समकालीन संदर्भ में भक्ति साहित्य

समकालीन युग में भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता पहले की अपेक्षा और अधिक बढ़ गई है। आज का समाज भौतिकवाद, उपभोक्तावाद, नैतिक मूल्यों के ह्रास, सामाजिक असमानता, धार्मिक कट्टरता तथा सांस्कृतिक विघटन जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में भक्ति साहित्य प्रेम, करुणा, सहिष्णुता, समानता और मानवता जैसे शाश्वत मूल्यों का संदेश देकर समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है।

भक्ति संतों ने जाति, धर्म, भाषा और वर्ग के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध किया तथा सामाजिक समरसता और मानवीय एकता पर बल दिया। कबीर, गुरु नानक, रैदास, तुलसीदास, सूरदास और मीराबाई की शिक्षाएँ आज भी सामाजिक सौहार्द, नैतिक जीवन और आध्यात्मिक संतुलन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि मानवता, सत्य और प्रेम ही जीवन के वास्तविक आधार हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में भी भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा और मातृभाषाओं के महत्व पर विशेष बल दिया गया है। इस दृष्टि से भक्ति साहित्य नई पीढ़ी को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, लोकभाषाओं और जीवन-दर्शन से जोड़ने का प्रभावी माध्यम है। इस प्रकार भक्ति साहित्य आज भी सामाजिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता, नैतिक जागरूकता और भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड4, अंक3, जुलाई - सितम्बर 2026

निष्कर्ष

भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण और जनोन्मुख स्वरूप है, जिसने आध्यात्मिकता, नैतिकता और सामाजिक चेतना को लोकजीवन से जोड़ने का कार्य किया। मध्यकालीन भारत में जब ज्ञान और धर्म पर सीमित वर्ग का प्रभुत्व था, तब संत एवं भक्त कवियों ने लोकभाषाओं के माध्यम से ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाकर उसे लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया। कबीर, गुरु नानक, रैदास, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई तथा अन्य संत कवियों ने प्रेम, समानता, करुणा, सहिष्णुता और मानवता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को अपने साहित्य का आधार बनाया। उन्होंने जाति-पाँति, धार्मिक आडंबर, सामाजिक भेदभाव और रूढ़ियों का विरोध करते हुए लोकमंगल और सामाजिक समरसता की स्थापना का प्रयास किया।

भक्ति साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल सिद्धांतों को सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत कर समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाया। इसके माध्यम से न केवल सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण हुआ, बल्कि सामाजिक सुधार, नैतिक जागरण और मानवीय मूल्यों का भी विकास हुआ। वर्तमान समय में, जब समाज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब भक्ति साहित्य के आदर्श और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। अतः भक्ति साहित्य भारतीय संस्कृति, लोकचेतना और ज्ञान परंपरा का अमूल्य स्रोत है, जो आज भी सामाजिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता तथा मानवीय मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र (2020). हिन्दी साहित्य का इतिहास. प्रयागराजः लोकभारती प्रकाशन।
2. द्विवेदी, आचार्य हजारीप्रसाद (2021). कबीर. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
3. द्विवेदी, आचार्य हजारीप्रसाद (2019). हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
4. नामवर सिंह (2018). दूसरी परम्परा की खोज. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
5. बच्चन सिंह (2017). हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन।
6. रामविलास शर्मा (2016). भारतीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
7. नागेन्द्र (2019). हिन्दी साहित्य का इतिहास. नोएडाः मयूर पेपरबैक्स।
8. विद्यानिवास मिश्र (2015). भारतीय संस्कृति के आधार. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020. नई दिल्ली।
10. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा: उच्च शिक्षा हेतु दिशानिर्देश. नई दिल्ली।